Bodhi-Path Year 2020 July Issue Volume 19 Page No 43-48

पालि साहित्य में दान पारमिता : एक अनुषीलन

सुनीता सिन्हा
शोध छात्रा, विभाग–पालि
नालन्दा कॉलेज, बिहार शरीफ (नालन्दा)

आदि काल से ही भारत वर्ष मनिषियों का जन्म एवं ज्ञान स्थल रहा है। ज्ञानियों के साथ–साथ महादान कर्ता का भी प्रादूर्भाव समय–समय पर होता रहा है। यहाँ तक कि याचक (लेनेवाला) हार जाता है परन्तु दाता (देने वाला) नहीं। पालि साहित्य में ऐसा ही महामानव 'सिद्धार्थ' का प्रार्दूभाव हाता है, दानियों में सर्वश्रेष्ठ थे। 10 पारमिताओं में पहला दान पारमिता का अभ्यास करने के बाद ही आगे चलकर बोधिसत्व से सम्यक सम्बुद्ध बनते है। पालि वा|मय में पारमिताओं को बुद्ध धारन धर्म भी कहा गया है[1] पारमिताएँ बुद्धत्व तक जाने का सोपान (मार्ग) है। पालि वा|मय में 10 पारमिताओं का वर्णन मिलता है। जातक निदान कथा में वर्णित है कि बुद्धत्व की आकांक्षा रखने वाले 'सुमेध' नामक भिक्षु के अथक परिश्रम करने पर 10 पारमिताओं प्रकट हुई, जो निम्न है :–

''दानं सीलं च नेक्खम प''ाविरिय च की दिसं।
खन्ति सच्चमधिट्ठानं, मेत्तुपेक्खा च की दिसा''।।

अर्थात् दान, शील, नेक्खम, प''''ा, विरिय, खन्ति, सच्च, अधिट्ठान (दृढ़ निष्चय), मेत्ता और उपेक्खा (सुख–दुःख में सम्भाव) है। पारमिताओं को पूर्ति करते समय बोधिसत्व अपने शरीर के अंगो तक दान दे देते है, उसे दान पारमिता कहते है[2]। वाह्य वस्तुओं के परित्याग को दान–उपपारमिता कहा गया है[3]। किन्तु जब बोधिसत्व अपने प्राणी (जीवन) तक का परित्याग कर दान की पराकाष्ठाा प्राप्त कर लेते है तो उसे दान–परमत्थ पारमिता कहते है[4]। इसी तरह शेष पारमिताओं के भी 3–3 प्रकार के वर्गीकरण करने से पारमिताओं की संख्या 30 पूर्ण होती है।

दसो पारमिताओं के अभ्यास में बोधिसत्व के जो निजी स्वार्थ हेतु उनमें कुछ भी नहीं है। अतः दसो पारमिताओं का प्रधान लक्षण पर अनुग्रह है। परोपकारी भावना से ओत–प्रोत है। अविकम्पन रस से भरी हुई है। परसेवा करना ही उनका गुण है, बोधिसत्व करूणा रूपी उपाय कौसल्य से परिगृहित होकर परित्याग की भावना से दान पारमिता का अभ्यास करते है। इसी करूण से मुक्त होकर अर्कतव्य से विरक्ति एवं कर्तव्य चेतना से काय एवं वचन की शुचिता का पालन कर सील पारमिता को पूर्ण करते है। इसी करूणा

से ओत–प्रोत होकर संसार को प्राचीन नवीन आप भव से निकलने हेतु निष्चय करके 'नेक्खम पारमिता' की पूर्ति करते है। 'प""ा पारमिता' का अभ्यास कर बोधिसत्व पदार्थो के विषेष लक्षणों का अववोध करते है। काय एवं चित्त को परहित का अवलम्बन बनाकर इसी करूणा से प्रेरित होकर 'विरिय पारमिता' का अभ्यास करते है। इसी तरह खन्ति, सच्च अधिट्ठान, मेत्ता तथा उपेक्खा पारमिता का तीनो प्रकार से पराकाष्ठा तक अभ्यास करते है।

1. **दान पारमिता :–** बोधिसत्व बुद्धत्व प्राप्ति को निष्चय करने के बाद बुद्धकारक धर्मो का चिंतन करते है। वे दसो दिषाओं में सभी धर्मो का अवलोकन करते हुए सर्वप्रथम दान पारमिता का अभ्यास करते है।[5] दान का अर्थ 'देना' होता है। यदपि त्याग परित्याग, पूण्य कर्म, निर्लाभता तथा उदारता भी दान की ही समानार्थक अर्थ है। अं ुत्तर निकाय में दो प्रकार का दानों का उल्लेख मिलता है :– 1. आमिष दान 2. धर्मदान जिस प्रकार का दान दिया जाता है या जिस प्रकार के व्यक्ति को दान दिया जाता है उसका वैसा ही फल प्राप्त होता है। दीघ निकाय में दान के चार प्रकार बताएँ गए है 1. सत्कृत दान (बखूबी तैयार किया गया) 2. स्वहस्त दानं (अपने हाथ से दिया गया) 3. चित्तीकृत दानं (मन से सोच विचार कर दिया गया दान) तथा 4. अनपविद्ध दानं (अखंडित दान देना) पूणः अं ुत्तर निकाय में आठ प्रकार के दानों की चर्या हुई है। जो निम्न है :–

(1) अस""ा दानं (अनाषक्त भाव से दान) (2) भयादानं (भय से दान देना) (3) उदासि में तिदानं (अदृष्य दान देना) (4) दस्सती में ति दानं (दृष्य दान देना) (5) साहुदानं (अच्छा दान) (6) पतंचो अपचंतान दानं (पकान न पकाने वालों को दान देना) (7) कृत्तिदानं (कीर्ति हेतु दान) (8) चित्तालकार परिक्खारत्थ दानं (चित्तालंकार परिएकार हेतु दान) अं ुत्तर निकाय में ही एक जगह दान की पांच श्रेणियों कही गई है। 1. सद्धाय दानं (श्रद्धा से दान) 2. सक्कचव दानं (सावधानी से दान) 3. कालेन दानं (समय पर दान) 4. अनुग्गहित चिततो दानं (अनुगृहित मनोभाव से दान) 5. अत्तानं च परं च अनुपहच्च दानं (स्वंय तथा अन्य को विना हानि पहुचाएं दान) जिस प्रकार गुणों से युक्त खेतो में अच्छे बीज बोने से अच्छी फसल होते है उसी प्रकार आठ गुणों से सम्पल व्यक्ति को दान देने में महापुण्य का लाभ प्राप्त होता है।

पालिवा मय के अनुसार स्वर्ण–रजत सहित किसी भी वस्तु को धन नहीं कहा गया है। वरना श्रद्धा, शील आदि गुणों को धन कहा गया है। अं ुतर निकाय में दिए गए 7

प्रकार को धनी को सूचि में 'दान' छठे स्थान पर है। अं ुतर निकाय में ही एक और 8 सत्पुरूष दानो की सूचि इस प्रकार से है :– सुचिदानं (पवित्र दान) पणीत दानं (प्रणित दान) कालिन दानं (समय पर दान देय दान), दद चितं पसदिति (प्रसन्नचित से दिया गया दान), दत्वा अत्तमनो होति (देकर सतुष्ट होना) बोधिसत्व वस्तुओं को अनित्य स्वभाव को जानते हुए बताते हैं कि प्रत्येक उत्पन्न वस्तु का धर्म ही है विनाष होना। अतः बोधिसत्व संसार के सभी चीजों के प्रति अनाषक्ति की भावना रखते हैं, कि अगर धन को भोग या दान नहीं किया गया तो राजा या चोर अपहरण कर लेता है या आग से नष्ट हो जाता है[6]।

संयुक्त निकाय में 'दानं' के बारे में बताया गया है कि दान और युद्ध दोनो को एक समान कहा गया है। जिस प्रकार युद्ध में शाहस और वीरता के द्वारा शत्रु पर विजय प्राप्त किया जाता है उसी प्रकार छोटे–छोटे दान करने से भी अंतःकरण से जागृत होने पर लोभ अपने आप समाप्त हो जाता है। सत्यपात्र का दिया गया दान बहुत ही फलदायी होता है। सुत्तनिपात, विमानवत्थु, पेतवत्थु में भी दान के महत्वपूर्ण परिणामों, विपाको एवं दान के फलों का उल्लेख मिलता है।

दान पारमिता का स्वभाव ही है परित्याग करना। दान देने पर देय वस्तु के प्रति लोभ नष्ट हो जाता है। बोधिसत्व क्रमानुसार दान पारमिता के प्रत्ययों उनके प्रारंभ तथा अंत और उनके तुरन्त अग्रलिखित वस्तुएं दे देना चाहिए। यथा :– खेत, मकान, सोना, गाय, भैस, दास, दासी, अनाज तथा शरीर के विभिन्न अंग। यहाँ तक की अपना जीवन भी निरपेक्ष भाव से दे देना चाहिए। अपने किसी प्रिय व्यक्ति की याचना पर, मेरे प्रिय व्यक्ति ने याचना को है, ऐसा सोचकर मन में प्रसन्नता लानी चाहिए। दान के परित्याग से शत्रु भी मित्र बन जाता है। ऐसा मन में विचार कर प्रसन्न होना चाहिए। इसमें संकोच नहीं करना चाहिए। अर्थात जड़ी–बुटियाँ (वृक्षों की छाल, पपडी, तना, डाली, पते, पुष्प, फल, बीज) दवा हेतु ले जायी जाती है, उसी प्रकार सभी लोको के प्राणियों के हितार्थ अपनी काया को लगाते हुए मिथ्या तर्क–विर्तक नहीं करनी चाहिए। 'यह मैं हुँ, ''यह मेरा है'' 'यह मेरी आत्मा है' यह विनाषी पदार्थो के प्रति सिर्फ मोर मात्र है। अतः अपनी काया के आंतरिक या वाहरी (हाथ, पैर, नेत्र आदि) अंगो के प्रति भी निरपेक्ष होकर उनका हरण किए जाते समय स्थिर चित होना चाहिए[7]। संबोधि हेतु बोधिसत्व को अपने शरीर तथा जीवन के प्रति भी अनाषक्त भाव से रहना चाहिए। दस भूमि सूत्रानुसार ऐसी कोई वस्तु दानं में नहीं देना चाहिए, जिससे दुसरे के शरीर और जीवन को हानि पहुँचता हो यथा– विष, मद्य,

अस्त्र–षस्त्र, मादक द्रव्य पदार्थ तथा जाल आदि। उसे वैसे भूमि का भी दान नहीं करना चाहिए जिस पर षिकार किया जा सकता है। किसी के लिए आत्माहत्या के साधन रूपी किसी वस्तु, अनुचित उपहार का भी दान नहीं करना चाहिए। बोधिसत्व को दान का आधार करूणा है। इसी से प्रेरित होकर अपना सर्वस्व दान कर देता है। वस्तुतः बोधिसत्व की महाकरूणा से संसार का कोई भी प्राणि वंचित नहीं है।

दान पारमिता का उदेष्य :– दान पारमिता का उदेष्य है कि परित्याग व धर्मोपदेष द्वारा अभय दान देकर लोगों के जीवन को सुखमय करना या प्राणियों पर विभिन्न प्रकार का अनुग्रह करना। बोधिसत्व द्वारा देय वस्तुओं के रूप में तीन प्रकार का दान का उल्लेख मिलाता है :– 1. आभिष दान 2. अभय दान तथा 3. धर्म दान बोधिसत्व द्वारा देय द्विविध वस्तुएं हैं :– आभ्यांत्ररिक व बाह्य दान प्रतिपत्ति, बोधिसत्व 10 प्रकार के 'बाह्य' वस्तुओं का परित्याग करते हैं, यथा :– अन्न, पान, घर, वस्त्र, यान, माला, विलेपन, गंध, शय्या और प्रदीप। दान देते समय किसे क्या चाहिए, यह जानकर उसे मांगने पर या विना मांगे भी स्वयं दान देते है। वे सवको (गृहस्थ या प्रवजित, माता–पिता, संबंधित, मित्र, पत्नी, पुत्र, दास–दासी) न हिसाव से देते है ना सूखा–सूखा, वरन् समुचित मात्रा में देते हैं। न लाभ–सत्कार, न प्रत्युपकार तथा न फल की इच्छा से देते है। वरन् सम्यक् संबोधि हेतु दान देते है। बोधिसत्व याचक के प्रति घृणा भाव से आक्रोषपूर्वक क्रोधित हाकर देय वस्तुओं का दान नहीं करते वरन् खुष होकर आदरपूर्वक दान देते है। वे कौतुहल उत्पन्न करने हेतु नहीं, वरन् कर्म–फल में श्रद्धा रखते हुए दान देते है। परस्पर फूट डालने के विचार से कभी नहीं वरन् परिषुद्ध चित से दान देते है। वे प्रिय व मधुरभाषी, संक्षिप्त वाणी से युक्त होकर दान देते है। बोधिसत्व वे अपनी पत्नी, पुत्र, पुत्री, दास, दासी तथा कर्मकार को बिना उनसे पुछे उनके दुःखी होने पर किसी वस्तु का दान नहीं देते। वरन् उन्हें सच–सच बताकर उनकी पूर्ण सहमती से ही दान देते है। वे जानवुझकर राक्षस, पिचास या अन्य किसी को भी क्रूर कार्य करने के लिए कोई वस्तु दान नहीं करते। प्रजा के अनर्थ या उनके दुःखी होने के संभावना में वे अपने राज्य का दान नहीं करते अभ्यांतर दान दो प्रकार का माना गया है। जैसे कोई व्यक्ति किसी के घर के छत गिर जाने पर वर्षा या शांति से तत्तकाल उसको रक्षा का कोई उपाय न देखकर स्वंय वहां लेटकर अपने शरीर से उसकी रक्षा करे। हाथ पैर नेत्रादि अंगो का दान दूसरे प्रकार का अभ्यांतरिक दान है। वाह्य और अभ्यांतर दोनो प्रकार की वस्तुओं का दान संबोधि प्राप्त हेतु दिया जाता है[8]।

राजा, चोर, अगलगी, बाढ़, शत्रु, वाघ, सांप, राक्षस तथा भूत पिचास से उत्पन्न भय से प्राणियों की रक्षा कर के उन्हे अभय दान दिया जाता है।

अज्ञानियों को धर्मोपदेष के माध्यम से ज्ञान का मार्ग बताना ही धर्मदान है। इहलोक व परलोक हित के लिए सच्चा उपदेषही धर्म दान है, बोधिसत्व का धर्म दान पार न गए हुए को पार जाने के लिए और पार गए हुए को परिपक्वता हेतु होता है, दान, शील, स्वार्गिक कथाएँ कार्योंकि दुष्परिणाम, संक्लेषयुक्त निष्क्रमण का फल, श्रावक बोधि, सम्यक् संबोधि, दान पारमिता का स्वभाव रस और लक्षणादि पर देखना ही 'धर्मदान' है। यही सर्वश्रेष्ठ दान भी है।

'आभिष दान' का अर्थ है :– **आयु, वर्ण, सुख, बल,** और **बुद्धि** की निष्पति हेतु अन्न का दान तथा काय क्लेष ओर प्यास बुझाने हेतु पेय पदार्थों का दान और लज्जा मिटाने तथा अलंकार हेतु सुदंर वस्त्रों का दान[9], बोधिसत्व इस प्रकार का सर्वदान किसी के घात हेतु नहीं, भय से नहीं, लज्जा से नहीं वरन् निःस्वार्थ भाव से स्वंय अपने हाथों से देते हैं। वे कालानुरूप दान देते है, समग्ररूप से दान देते है, तथा तीनों कालों में प्रसन्न मन से दान देते है, तथा कभी किसी याचक का अपमान नहीं करते।[10]

दस पारमिता पर ही सम्पूर्ण जातक कथा आधारित है। गौतम बुद्ध 547 जन्मों तक पारमिताओं के बाद ही सम्यक सम्बुद्ध बने थे। बोधिसत्व मनुष्य ही नहीं पषु पक्षियों के रूप में भी बतौर नायक उक्त कथा से संबधित है। इन पात्रों के मुख से कोई न कोई षिक्षा (बुद्धि कौषल या ज्ञान चातुर्थ) कथाकार ने आवष्य दिलाई है। निःसदेह भारत में इन विष्व प्रसिद्ध लोक कथाओं का एक अपना स्थान है। इन कथाओं के नायक–नायिकाओं के लिए कुछ भी अदेय्य नहीं है। उनके सामने याचक ही हार जाता है, दाता नहीं। दान पारमिता के पूर्ति हेतु इन कथाओं के पात्र धन–सम्पति, पुत्र, पत्नी, शरीरांग और यहाँ तक की अपना जीवन तक समर्पित कर देते है।

चरिया पिटक के कुल चर्याए (चरित) का उल्लेख किया गया है। इन सभी चरियाओं को कथाएँ (केवल एक को छोड़कर महागोविनद चरिया) जातक कथा में हैं। प्रत्येक चरिया का वर्णन जातक कथा के वर्णारूप है पर चर्याओं रूप गाथात्मक है। इसी तरह मूल जातक कथाएँ वहा भी पाया जाता है।

दान पारमिताएँ और उनके समानांतर जातक कथाएँ इस प्रकार है :–

1. अकिति चरिया – अकिति जातक (480)
2. संख चरिया – संखपाल जातक (24)

3. कुरूधम्म चरिया	–	कुरूधम्म जातक (276)
4. महासुदस्सन चरिया	–	महासुदस्सन जातक (95)
5. महागोविंद चरिया	–	महागोविंद जातक (यह दीघनिकाय में पाया जाता है, जातक में इसका वर्णन नहीं मिलता है।)
6. निमिराज चरिया	–	निमि जातक (54)
7. चदं कुमार चरिया	–	खण्हाल जातक (542)
8. सिविराज चरिया	–	सिवि जातक (499)
9. वेस्संतर चरिया	–	वेस्संतर जातक (347)
10. ससपंडित चरिया	–	सस जातक (316)

निष्कर्ष :– पारमिताएं ही बोधिसत्व के बुद्धतव तक जाने का सोपान (मार्ग) है, इसकी पूर्णता के बाद ही सम्यक संबुद्ध बनते है, बोधिसत्व पारमिताओं के पूर्णता हेतु 547 जन्म लेते है। 10 पारमिताओं में प्रथम दान पारमिता का अभ्यास करके ही आगे बढते है। भिन्न–भिन्न ग्रंथो में दान के भिन्न–2 प्रकार से वर्गीकृत किया गया है। दान के अनेक प्रकारो के अध्ययन से पता चलता है कि 'दान' एक बहुत बड़ी शक्ति है जिसके द्वारा मानव लोभ रूपी शत्रु पर विजय प्राप्त कर लेता है। सभी दानों में धर्मदान की श्रेष्ठ माना गया है। दान स्वर्ग का सीधा मार्ग है। दान के माध्यम से ही बड़े–बड़े विहारो का उद्‌गम एवं विकास अग्रसर हो रहा है।

———:::::———

संदर्भ सूचि :–

1. चरियापिटक, पृष्ठ–217
2. प. वि. पृष्ठ–50
3. वही
4. वही
5. जातक हिन्दी पृष्ठ–79, (भ. आ. कौ.)
6. महानिदेष–1,1,2
7. प. दी. पृष्ठ–288
8. प. दी. पृष्ठ–239
9. वही, पृष्ठ–240
10. प. दी. पृष्ठ–241